Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

MEC - 104

वृद्धि और विकास का अर्थशास्त्र

(Economics of Growth and Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Bhavya Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 380/-

Content

वृद्धि और विकास का अर्थशास्त्र

(Economics of Growth and Development)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खंड-1 : आर्थिक संवृद्धि : एक परिचय (INTRODUCTION TO ECONOMIC GROWTH)

1. आर्थिक संवृद्धि : संकल्पनाएं और मापन 1
   (Economic Growth: Concepts and Measurement)
2. हैरोड-डोमर संवृद्धि प्रतिमान (The Harrod-Domar Growth Model) 11
3. नियोक्लासिकल ग्रोथ मॉडल – सोलो मॉडल 20
   (The Neo-Classical Growth Model – The Solow Model)
4. कैम्ब्रिज विकास मॉडल (The Cambridge Growth Model) 25

खंड-2 : प्रौद्योगिकी, उत्पादकता और संवृद्धि
(TECHNOLOGY, PRODUCTIVITY AND GROWTH)

5. तकनीकी परिवर्तन और आर्थिक संवृद्धि (Technical Change and Economic Growth) 32
6. कुल कारक उत्पादकता (Total Factor Productivity) 39
7. वितरण और संवृद्धि (Distribution and Growth) 47
8. विकास योजना मॉडल (Development Plan Models) 55

खंड-3 : संवृद्धि मॉडलों का विस्तार और समालोचना
(EXTENSION AND CRITIQUE OF GROWTH MODELS)

9. इष्टीकर्ताओं सहित संवृद्धि प्रतिमान (Growth Models with Optimising Agents) 64
10. अनिश्चितता के परिवेश में संवृद्धि प्रतिमान (Growth Models Under Uncertainty) 73
11. अंतर्जात विकास मॉडल-I (Endogenous Growth Models-I) 79
12. अंतर्जात विकास मॉडल-II (Endogenous Growth Models-II) 87
13. आर्थिक संवृद्धि में वर्तमान विवाद (Current Debates in Economic Growth) 94

खंड-4 : विकास और अल्प विकास-I
(DEVELOPMENT AND UNDERDEVELOPMENT-I)

14. विकास : मानव कल्याण दृष्टिटकोण (Development: Human Welfare Approach) 101

15. विकास प्रक्रिया और उसके परिणाम 109
(Development Processes and Its Consequences)

16. श्रम बाजार और श्रमिक प्रवासन (Labour Market and Labour Migration) 115

खंड-5 : विकास और अल्प विकास-II
(DEVELOPMENT AND UNDERDEVELOPMENT-II)

17. वैश्विक आपूर्ति शृंखला (Global Supply Chain) 121

18. जनसांख्यिकीय संक्रमण और पोषण संबंधी समस्याएँ 131
(Demographical Changes and Nutritional Issues)

19. व्यवहारवादी अर्थशास्त्र और विकास (Behavioural Economics and Development) 140

20. आर्थिक विकास में भौगोलिक स्थिति (Geography in Economic Development) 150

खंड-6 : मानवाधिकार और विकास
(HUMAN RIGHTS AND DEVELOPMENT)

21. विकास के लिए अधिकार-आधारित दृष्टिकोण 158
(Rights Based Approach to Development)

22. जेन्डर (लिंग) और विकास (Gender and Development) 165

23. लोकतंत्र और विकास (Democracy and Development) 173

खंड-7 : राज्य, बाजार और संस्थाएँ
(STATE, MARKETS AND INSTITUTIONS)

24. विकास में राज्य की भूमिका (Role of the State in Development) 180

25. संस्थानिक विकास और सुधार 187
(Institutional Evolutions and Reforms)

26. जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक संसाधान प्रबंधन 195
(Climate Change and Natural Resource Management)

खंड-8 : विकास अनुभवों पर चिंतन
(REFLECTION ON DEVELOPMENT EXPERIENCES)

27. चीन की अर्थव्यवस्था (The Chinese Economy) 204

28. पूर्वी ऐशियाई अर्थव्यवस्थाएँ 216
(The East Asian Economics)

29. ब्राजील की अर्थव्यवस्था 225
(The Brazilian Economy)

30. दक्षिण अफ्रीकी अर्थव्यवस्था 232
(The South African Economy)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

वृद्धि और विकास का अर्थशास्त्र
(Economics of Growth and Development)

MEC-104

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : दोनों खंडों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-अ

नोट : इस खंड से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. हैरोड-डोमर मॉडल की संरचना की चर्चा कीजिए। इस मॉडल की प्रमुख मान्यताओं को बताइए। आपकी राय में इस मॉडल की क्या सीमाएँ हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'हैरोड-डोमर प्रतिमान की पृष्ठभूमि', पृष्ठ-17, प्रश्न 10

प्रश्न 2. व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार सोलो मॉडल दीर्घकालीन आर्थिक संवृद्धि को साथ लेकर चलता है, सोलो मॉडल की संरचना एवं कार्यशीलता को बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'सोलो मॉडल', पृष्ठ-23, प्रश्न 4

प्रश्न 3. आर्थिक संवृद्धि के काल्डोर मॉडल की चर्चा कीजिए। किस प्रकार पेजीनेव की आर्थिक संवद्धि की दर काल्डोर की संवृद्धि दर से भिन्न है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-26, 'काल्डोर का आर्थिक संवृद्धि मॉडल', पृष्ठ-29, प्रश्न 5

प्रश्न 4. रैम्जे का आर्थिक संवृद्धि के मॉडल का विश्लेषण कीजिए। पूँजी संचयन की वैश्विक दर की व्याख्या कीजिए। किस प्रकार आर्थिक संवृद्धि दर का कैस-कूपमान का मॉडल रैम्जे के मॉडल का विस्तार करता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-64, 'रामसे का संवृद्धि प्रतिमान', पृष्ठ-65, 'संचयन का स्वर्णिम नियम', पृष्ठ-66, 'संवृद्धि का कास-कूपमैन्स प्रतिमान'

खंड-ब

नोट : इस खड से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. तकनीकी परिवर्तन के हिक्स के वर्गीकरण की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-32, 'तकनीकी परिवर्तनों का वर्ग विभाजन', पृष्ठ-33, 'हिक्स का तकनीकी परिवर्तन का वर्ग विभाजन'

प्रश्न 6. हेरिस टोडर मॉडल की व्याख्या कीजिए तथा इस मॉडल की प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-116, 'ग्रामीण-शहरी श्रमिक प्रवासन', पृष्ठ-118, प्रश्न 5

प्रश्न 7. अन्तर्जात (endogenous) संवृद्धि मॉडल की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। ल्यूकास के संवृद्धि मॉडल की पूँजी निर्माण प्रेरित संवृद्धि की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-79, 'नियोक्लासिकल मॉडल में मानव पूँजी', पृष्ठ-81, प्रश्न 1, पृष्ठ-85, प्रश्न 10

प्रश्न 8. कुजनेट्स के कोष्ठित (U-inverted) प्राक्कल्पना की चर्चा कीजिए। इसकी वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-48, 'कुजनेट्स की उल्टी-U परिकल्पना', पृष्ठ-51, प्रश्न 5

प्रश्न 9. आर्थिक संवृद्धि किस प्रकार प्रजातंत्र को प्रभावित करती है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-23, पृष्ठ-173, 'लोकतंत्र पर आर्थिक विकास का प्रभाव', पृष्ठ-176, प्रश्न 5

प्रश्न 10. आर्थिक कल्याण के संकेतक के रूप में प्रति व्यक्ति आय को प्रयोग करने की क्या सीमाएँ हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-105, प्रश्न 8, पृष्ठ-106, प्रश्न 9

प्रश्न 11. वैश्विक आपूर्ति शृंखला (chain) की प्रक्रिया तथा इसके अवयवों की चर्चा कीजिए। वैश्विक आपूर्ति शृंखला तथा क्षेत्रीय मूल्य के बीच अन्तर बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-123, प्रश्न 2, पृष्ठ-126, प्रश्न 7

प्रश्न 12. भारत के संदर्भ में जनसंख्या परिवर्तन में आयुवार जनसंख्या के वितरण में हुए परिवर्तन के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-131, 'जनसांख्यिकीय संक्रमण और जनसंख्या की आयु संरचना', पृष्ठ-134, प्रश्न 4

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

वृद्धि और विकास का अर्थशास्त्र
(Economics of Growth and Development)

MEC-104

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : दोनों खंडों से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-अ

नोट : इस खंड से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. सरल शब्दों में 'आर्थिक संवृद्धि' को कैसे परिभाषित करते हैं? इसका क्या अर्थ होता है? आर्थिक संवृद्धि की वैकल्पिक एवं अधिक औपचारिक परिभाषा किस प्रकार होती है? यह इसे एक 'गत्यात्मक संकल्पना' का स्वरूप किस प्रकार प्रदान कर देती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-3, प्रश्न 2

प्रश्न 2. सरल रूप में 'तकनीकी परिवर्तन' की परिभाषा किस प्रकार की जाती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-34, प्रश्न 1

प्रश्न 3. लॉरेन्ज वक्र क्या है? इसे एक चित्र की सहायता से समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-49, प्रश्न 2

प्रश्न 4. उन गैर-आर्थिक एवं आर्थिक कारकों को निर्दिष्ट करें, जो नियोजन की आवश्यकता को जन्म देते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-58, प्रश्न 3

खंड-ब

नोट : इस खंड से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. स्थैतिक ईष्टीकरण किस प्रकार से गत्यात्मक ईष्टीकरण से भिन्न होता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-67, प्रश्न 2

प्रश्न 6. 'ज्ञान पूँजी' 'मानव पूँजी' से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-82, प्रश्न 3

प्रश्न 7. स्पष्ट करें कि विचारों के उत्पादन में अपूर्ण प्रतिस्पर्धा क्यों शामिल होती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-89, प्रश्न 1

प्रश्न 8. पूर्ण अभिसरण और सशर्त अभिसरण का अर्थ बताएँ और दोनों के बीच अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-95, प्रश्न 1

प्रश्न 9. व्यवहारवादी विकास अर्थशास्त्र क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-141, प्रश्न 1

प्रश्न 10. स्वतंत्रता के संदर्भ में राज्य द्वारा निभाए जाने वाले इसके दो आयाम क्या हैं? उन तीन मूलभूत आयामों का उल्लेख करें, जिनके संबंध में व्यक्तिगत अधिकारों की बात की जाती है।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-159, प्रश्न 1

प्रश्न 11. संस्थावादियों ने किस आधार पर नवक्लासिकी दृष्टिकोण की आलोचना की थी?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-25, पृष्ठ-189, प्रश्न 1

प्रश्न 12. 1958-62 की नीतियों का क्या परिणाम रहा?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-27, पृष्ठ-207, प्रश्न 4

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

वृद्धि और विकास का अर्थशास्त्र
(Economics of Growth and Development)

आर्थिक संवृद्धि : संकल्पनाएं और मापन
(Economic Growth: Concepts and Measurement)

1

परिचय

आर्थिक संवृद्धि के विभिन्न पहलुओं, जैसे–आर्थिक संवृद्धि की परिभाषा, विश्व अर्थव्यवस्था का संवृद्धि-निष्पादन, आर्थिक संवृद्धि एवं विकास में अंतर, आर्थिक संवृद्धि का महत्त्व, स्रोत तथा सीमाएँ आदि का वर्णन किया गया है। मुख्यत: आर्थिक संवृद्धि का अर्थ है संसाधनों को पुनर्व्यवस्थित करके समाज के लिए उसका मूल्य संवर्धन करना या उसका मूल्य बढ़ाना। आर्थिक संवृद्धि के लिए विभिन्न प्रकार की नई-नई विधियों का प्रयोग किया जाता है, ताकि इसे अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाया जा सके। किसी भी प्रकार के विकास के लिए आर्थिक संवृद्धि अति आवश्यक है, क्योंकि आय में वृद्धि के बिना किसी भी प्रकार के विकास के अवसर कम हो जाते हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

आर्थिक संवृद्धि क्या है?

संसाधनों की पुनर्व्यवस्था करके उन्हें समाज के लिए पहले से अधिक मूल्यवान बनाने को आर्थिक संवृद्धि कहा जाता है। आर्थिक संवृद्धि का मुख्य उद्देश्य है विकास की गति को बढ़ाना तथा अल्पविकसित देशों के नागरिकों के जीवन स्तर को उच्च स्तर पर पहुँचाकर परिवर्तन को सकारात्मक दिशा देना। परिवर्तन संवृद्धि प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह हमें सिखाता है कि हमें केवल उत्पादन का ही ध्यान नहीं रखना है, अपितु उत्पादन के साथ-साथ उत्पादन की गुणवत्ता में भी परिवर्तन लाना है, ताकि उत्पाद के स्तर को पहले से उच्चतर किया जा सके।

आर्थिक संवृद्धि द्वारा नागरिकों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है, परंतु इसके लिए मुख्य आवश्यकता एक बेहतर शिक्षित समाज तथा स्वस्थ वातावरण की है।

आर्थिक संवृद्धि इन सबके साथ-साथ समाज को बेहतर उत्पाद, कार्यबल, अधिक दक्ष एवं सुरक्षित यंत्र आदि उपलब्ध कराती है, जिससे कार्यकुशलता में सुधार एवं परिवर्तन आता है, परंतु वर्तमान आर्थिक संवृद्धि सिद्धांत अभी गुणात्मक पहलुओं की सकारात्मकता को सिद्ध करने के लिए सत्य से काफी दूर हैं।

आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास में भेद

'आर्थिक संवृद्धि' वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन की धारणीय वृद्धि को दर्शाती है, जिसे GDP या NDP द्वारा मापा जाता है। 'आर्थिक विकास' सामाजिक संरचना में उन्नयन और बदलाव को दर्शाता है, जिसमें उत्पादन, श्रम कौशल और संसाधनों के वितरण में सुधार शामिल है। संवृद्धि विकास का हिस्सा है, परंतु विकास के लिए केवल संवृद्धि पर्याप्त नहीं होती।

आर्थिक संवृद्धि के प्रकार भेद

संवृद्धि दर का आकलन औसत वार्षिक संवृद्धि दर (AAGR) या चक्रवृद्धि वार्षिक संवृद्धि दर (CAGR) के रूप में किया जाता है, जो आधार और अंतिम वर्ष के आंकड़ों पर आधारित होती है। सभी वर्षों के आंकड़ों के साथ, प्रवृत्ति रेखा आधारित संवृद्धि दर भी मापी जा सकती है।

(क) संवृद्धि और परिवर्तन–यदि आर्थिक चर 'x' है, जिसका प्रारंभिक मान x_0 और अंतिम मान x_1 है, तो आनुपातिक परिवर्तन $(\Delta x/x_0) = (x_0 - x_0)/x_0$ से मापा जाता है। इस संवृद्धि को 100 से गुणा करके संवृद्धि दर प्राप्त होती है। यदि मान प्रतिशत में हो, तो गणना भ्रमित हो सकती है, जैसे–बेरोजगारी दर में 15% से 12% की गिरावट का वास्तविक परिवर्तन 20% होगा, न कि 3% इसलिए आधार और अंतिम वर्ष के आंकड़े परम मान (absolute values) होने चाहिए, न कि प्रतिशत।

(ख) संवृद्धि दर के प्रकार–संवृद्धि दर के आकलन के लिए औसत वार्षिक संवृद्धि दर (AAGR) और चक्रवृद्धि वार्षिक संवृद्धि दर (CAGR) का उपयोग किया जाता है। जब हमारे पास कई वर्षों के आंकड़े होते हैं, तो ज्यामितीय औसत का उपयोग किया जाता है, जिसे घातांकीय वृद्धि भी कहते हैं। स्थिर वृद्धि दर के लिए लघुगणकों का प्रयोग कर रैखिक प्रवृत्ति निकाली जाती है। ज्यामितीय औसत वृद्धि दर चक्रवृद्धि वृद्धि दर के समान होती है, जो सतत् चक्रवृद्धन को दर्शाती है।

आर्थिक संवृद्धि का महत्त्व

आर्थिक इतिहास के सवालों के उत्तर–जैसे, ब्रिटेन का औद्योगीकरण और बाद में अन्य देशों से पिछड़ने के कारण,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

एशियाई देशों की तीव्र संवृद्धि और चीन का शानदार आर्थिक प्रदर्शन।

1. नीति निर्धारण में मदद–अल्पकालिक और दीर्घकालिक नीतियों को बेहतर ढंग से समझने और लागू करने में सहायक।

2. जनसमुदाय को अधिक विकल्प–वृद्धि अधिक आराम या धन-संपदा चुनने के अवसर प्रदान करती है और श्रम शक्ति को अधिक जटिल कार्यों में संलग्न करती है।

3. सामाजिक तनावों का निवारण–तीव्र वृद्धि से विभिन्न वर्गों की आकांक्षाओं को संतुष्ट किया जा सकता है, जिससे सामाजिक तनाव कम होते हैं।

4. परिवेश पर नियंत्रण–वृद्धि के कारण उच्च आय का उपयोग जीवन रक्षक दवाओं और तकनीकी प्रगति में किया जाता है।

5. नारी सशक्तिकरण–वृद्धि से महिलाएं घर के कामों से मुक्त होकर अधिक उत्पादक कार्यों में संलग्न हो सकती हैं।

6. मानववाद को अपनाने का अवसर–अतिरिक्त आय का उपयोग कम भाग्यशाली लोगों की मदद में किया जा सकता है।

7. गरीबी हटाने का प्रभावी उपाय–वृद्धि से चीन, भारत और एशियाई देशों में गरीबी कम हुई है और भेद्य वर्गों की सहायता के लिए नीतियां सफल रहीं।

आर्थिक संवृद्धि के स्रोत

आर्थिक वृद्धि के तीन मुख्य स्रोत हैं–

1. भौतिक एवं मानव पूँजी में निवेश,
2. प्रौद्योगिकीय उन्नति,
3. संस्थागत एवं नीतिगत परिवर्तन, जैसे–
   (i) मुक्त व्यापार,
   (ii) स्थिर मूल्य,
   (iii) प्रतिस्पर्द्धात्मक बाजार,
   (iv) सुनम्य पूँजी बाजार,
   (v) उच्च सीमांत कर दरों से परिहार,
   (vi) सुनिश्चित स्वत्व अधिकार तथा
   (vii) राजनीतिक स्थिरता।

पूँजी निर्माण–आर्थिक वृद्धि प्रक्रिया में पूँजी निर्माण की निर्णायक भूमिका है, क्योंकि पूँजी निर्माण की दर को बढ़ाए बिना पूँजी का संचय असंभव है। पूँजी निर्माण के साथ-साथ कौशल निर्माण भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता का स्तर उच्चतर किया जा सके तथा इससे भौतिक कल्याण का भी लाभ प्राप्त हो सके। तीव्र आर्थिक वृद्धि को प्रेरित करने के लिए पूँजी निर्माण की ऊँची दर को भी पर्याप्त महत्त्व दिया जाता है।

पूँजी-उत्पादन अनुपात–अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में पूँजी की उत्पादकता को पूँजी-उत्पादन अनुपात दिए गए समय-बिन्दु पर दर्शाता है। भिन्न उद्योगों तथा अर्थव्यवस्थाओं हेतु पूँजी-उत्पादकता अनुपात भी भिन्न होता है तथा इसमें विविधता किसी समयावधि के उपरांत नजर आती है। पूँजी-उत्पादन अनुपात के निर्धारण में परिवर्धन की अवस्था तथा विभिन्न निवेशों का समावेश सहायक होता है। निवेश की दर बढ़ाने तथा उत्पादकता में सुधार के लिए कारक उत्पन्न करना ऐसे दो परिवर्त्य हैं, जिन पर राष्ट्रीय उत्पादन की उच्च वृद्धि का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किसी अर्थव्यवस्था को चलना ही पड़ता है।

रोजगार संरचना–कार्यरत जनसमुदाय का रोजगार संरचना एक ऐसा कारक है, जिसे कालांतर में आर्थिक परिवर्धन प्रक्रिया द्वारा निर्धारित किया जाता है। परिवर्धन के समय विभिन्न व्यवसायों में कार्यबल का इष्टतम वितरण दृष्टिगत होता है। इससे अर्थव्यवस्था की उत्पादकता का स्तर बढ़ जाता है, क्योंकि यह श्रम की उपयोगिता को बढ़ा देता है।

प्रौद्योगिकीय प्रगति–प्रौद्योगिकीय परिवर्तन की गति देश के वैज्ञानिक कौशल शिक्षा की गुणवत्ता तथा अनुसंधान एवं विकास को समर्पित सकल घरेलू उत्पाद की मात्रा पर निर्भर करती है। यह आर्थिक परिवर्धन का एक सर्वमान्य स्रोत है, क्योंकि इससे उत्पादन के कारकों की समान गुणवत्ता से अधिक उत्पादन करना संभव हो जाता है।

आर्थिक संवृद्धि की परिसीमाएं

आर्थिक संवृद्धि की सीमाएँ भी हैं, क्योंकि समाज पर इनके गंभीर सामाजिक तथा आर्थिक अप्रत्यक्ष प्रभाव होते हैं।

1. आय की विषमता–वृद्धि प्रक्रिया में लाभ-वितरण में असमानता आर्थिक वृद्धि की सबसे बड़ी कमजोरी है। गरीबी की समस्या को समाप्त करने के लिए तीव्र आर्थिक वृद्धि सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है तथा गरीबी की समस्या के निदान से सबसे अधिक लाभ विकासशील देशों को होता है, परंतु सबल जनसंख्या का एक छोटा-सा भाग ही परिवर्धित उत्पादन द्वारा संपन्न बन पाता है। ऐसा विकास एक अनैतिक विकास की श्रेणी के अंतर्गत आता है।

2. प्रदूषण व अन्य नकारात्मक बाध्यताएँ–आर्थिक वृद्धि में उत्पादन क्षमता तथा उत्पादन बढ़ने से प्रदूषण की मात्रा भी वातावरण में बढ़ जाती है, जिससे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण की मात्रा बढ़ जाती है।

3. गैर-नवीकरणीय संसाधनों का विलोपन–आर्थिक वृद्धि में संसाधनों की आवश्यकता बढ़ जाती है तथा इनके अधिक प्रयोग से इनकी मात्रा कम हो जाती है, जिससे गैर-नवीकरणीय संसाधनों की हानि होती है। आर्थिक परिवर्धन से सामाजिक कल्याण को हानि भी पहुँच सकती है। कई बार वर्तमान स्तर को उच्चतर बनाने से भविष्य भी संकट में पड़ सकता है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. सरल शब्दों में 'आर्थिक संवृद्धि' को कैसे परिभाषित करते हैं? इसका क्या अर्थ होता है?

उत्तर–आर्थिक विकास एक मूलभूत अवधारणा है, जो जीवन स्तर में सुधार और समाज के परिवर्तन को रेखांकित करती है। सरल शब्दों में, यह समाज द्वारा मूल्यवान वस्तुओं और सेवाओं को बनाने के लिए संसाधनों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। जैसा कि पॉल रोमर ने समझाया है, आर्थिक विकास रसोई में खाना पकाने के समान है, जहां मूल्यवान अंतिम उत्पाद बनाने के लिए व्यंजनों के अनुसार सामग्री को मिलाया जाता है। हालांकि सतत आर्थिक विकास की कुंजी केवल एक ही तरह का खाना पकाने में नहीं है, बल्कि बेहतर व्यंजनों की खोज में है जो कम नकारात्मक दुष्प्रभावों के साथ अधिक मूल्य उत्पन्न करते हैं। व्यावहारिक रूप से, आर्थिक विकास समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि के रूप में प्रकट होता है, जिससे उत्पादन का स्तर बढ़ता है। यह विस्तार केवल समान उत्पादन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सुधार, कार्यबल के कौशल को बढ़ाना और नवाचार और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देना भी शामिल है। आर्थिक विकास गतिशील है, जो सकारात्मक परिवर्तन की एक सतत प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, जो गतिविधि के अल्पकालिक विस्फोटों के बजाय लंबे समय तक बना रहता है। आर्थिक विकास के दो महत्त्वपूर्ण आयाम व्यापक विकास और गहन विकास हैं। व्यापक विकास का तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के कुल उत्पादन में वृद्धि से है, जबकि गहन विकास प्रति व्यक्ति उत्पादन को बढ़ाने पर केंद्रित है, जिससे आबादी के जीवन स्तर में सुधार होता है। समग्र आर्थिक विकास के लिए दोनों आयाम आवश्यक हैं।

इसके अलावा आर्थिक विकास केवल उत्पादन बढ़ाने के बारे में नहीं है; इसमें अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव भी शामिल हैं। इसमें ग्रामीण और कृषि-आधारित अर्थव्यवस्थाओं से शहरी और उद्योग-आधारित अर्थव्यवस्थाओं में संक्रमण शामिल है। इस तरह के बदलाव व्यक्तियों और समाजों के लिए उपलब्ध विकल्पों की सीमा को व्यापक बनाते हैं, जिससे जीवन की गुणवत्ता, स्वास्थ्य, शिक्षा और समग्र कल्याण में सुधार होता है। आर्थिक विकास से आर्थिक विकास को अलग करना महत्त्वपूर्ण है। जबकि आर्थिक विकास मुख्य रूप से समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में निरंतर वृद्धि को संदर्भित करता है, आर्थिक विकास एक व्यापक अवधारणा है। इसमें न केवल उत्पादन में वृद्धि बल्कि देश की सामाजिक-आर्थिक संरचना में प्रगतिशील परिवर्तन भी शामिल हैं। इसमें उत्पादन की संरचना, संसाधनों के आवंटन और कौशल और उत्पादकता में सुधार में बदलाव शामिल हैं। जबकि आर्थिक विकास के लिए आर्थिक विकास आवश्यक है, यह अपने आप में पर्याप्त नहीं है। सच्चे विकास में न केवल उच्च उत्पादन, बल्कि आय का समान वितरण, सामाजिक बुनियादी ढाँचे में सुधार और मानव कल्याण में उन्नति भी शामिल है। इस प्रकार, जबकि आर्थिक विकास विकास का एक महत्त्वपूर्ण घटक है, इसे नीतियों और उपायों द्वारा पूरक होना चाहिए, जो व्यापक सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान करते हैं।

प्रश्न 2. आर्थिक संवृद्धि की वैकल्पिक एवं अधिक औपचारिक परिभाषा किस प्रकार होती है? यह इसे एक 'गत्यात्मक संकल्पना' का स्वरूप किस प्रकार प्रदान कर देती है?

उत्तर–'आर्थिक संवृद्धि' शब्द को औपचारिक रूप से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन स्तर में एक लंबे समय तक सतत वृद्धि, जिसे मूल्य संवर्धन (value added) के संदर्भ में मापा जाता है। यह परिभाषा उन कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करती है, जो इस अवधारणा को गतिशील और अर्थव्यवस्थाओं के विकास को समझने के लिए आवश्यक बनाते हैं।

पहला, आर्थिक संवृद्धि की विशेषता इसकी स्थिरता और निरंतरता है। यह केवल उत्पादन में अल्पकालिक या अस्थायी वृद्धि नहीं है, बल्कि समय के साथ निरंतर और दीर्घकालिक विस्तार का प्रतीक है। यह निरंतर वृद्धि जीवन स्तर में सुधार, तकनीकी प्रगति और सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

दूसरा, आर्थिक संवृद्धि को मूल्य संवर्धन के संदर्भ में मापा जाता है, जो समग्र उत्पादन में आर्थिक गतिविधियों के शुद्ध योगदान को दर्शाता है। मूल्य संवर्धन उत्पादन प्रक्रिया के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि को दर्शाता है, जिसमें दक्षता लाभ, नवाचार और गुणवत्ता में सुधार शामिल हैं।

इसके अलावा आर्थिक संवृद्धि अपनी प्रकृति में गतिशील है और सकारात्मक परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें न केवल उत्पादन की मात्रा में वृद्धि शामिल है, बल्कि इसकी गुणवत्ता दक्षता और उत्पादकता को बढ़ाना भी शामिल है। यह गतिशीलता 'बेहतर व्यंजनों' की निरंतर खोज में परिलक्षित होती है, जैसा कि पॉल रोमर ने रूपक रूप में वर्णित किया है, जो उपलब्ध संसाधनों से अधिक मूल्य उत्पन्न करने के लिए प्रयास करता है।

साथ ही, आर्थिक संवृद्धि व्यापक (extensive) और गहन (intensive) दोनों आयामों को शामिल करती है। व्यापक वृद्धि कुल उत्पादन के विस्तार को संदर्भित करती है, जबकि गहन वृद्धि प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ाने पर केंद्रित होती है। ये दोनों आयाम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और सतत विकास और जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं।

इसके अलावा आर्थिक संवृद्धि अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलावों से जुड़ी होती है, जैसे–कि कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से औद्योगिक और सेवा-आधारित क्षेत्रों में संक्रमण। ये संरचनात्मक परिवर्तन उत्पादन, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों की बदलती संरचना को दर्शाते हैं, जो विविधीकरण, विशेषज्ञता और आर्थिक जटिलता में वृद्धि की ओर ले जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण रूप से आर्थिक वृद्धि केवल उत्पादन में मात्रात्मक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कार्यबल के कौशल, तकनीकी नवाचार और उत्पाद विविधता जैसे–कारकों में गुणात्मक सुधार भी शामिल हैं। ये गुणात्मक सुधार वैश्विक गतिशील वातावरण में अर्थव्यवस्थाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता, लचीलापन और अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने में योगदान करते हैं।

प्रश्न 3. विस्तृत संवृद्धि और 'गहन संवृद्धि' पदबंधों की परिभाषा किस प्रकार की जाती है?

उत्तर–विस्तृत संवृद्धि (Extensive Growth) और गहन वृद्धि (Intensive Growth) आर्थिक संवृद्धि के दो प्रमुख आयाम हैं, जो अर्थव्यवस्थाओं के विकास पथ को आकार देने में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं।

विस्तृत संवृद्धि का तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के कुल उत्पादन के विस्तार से है। इसे आर्थिक गतिविधियों की समग्र मात्रा में वृद्धि के रूप में पहचाना जाता है, जो अक्सर जनसंख्या वृद्धि, पूंजी संचय और तकनीकी प्रगति जैसे कारकों से प्रेरित होती है। विस्तृत संवृद्धि उन अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्त्वपूर्ण है, जो उत्पादन और उपभोग के उच्च स्तर को प्राप्त करना चाहती है। उदाहरण के लिए, विकासशील देशों में, जहां जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, विस्तृत संवृद्धि बुनियादी आवश्यकताओं और बुनियादी ढाँचे की बढ़ती मांग को पूरा करने में मदद करती है।

दूसरी ओर, गहन संवृद्धि प्रति व्यक्ति उत्पादन को बढ़ाने पर केंद्रित होती है, जिससे जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार होता है। गहन संवृद्धि उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादकता, दक्षता और नवाचार बढ़ाने में शामिल होती है, जो प्रति इनपुट उच्च उत्पादन स्तर प्राप्त करती है। यह प्रकार की वृद्धि आर्थिक समृद्धि को

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बढ़ाने, गरीबी को कम करने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्त्वपूर्ण है। गहन संवृद्धि विशेष रूप से उन परिपक्व अर्थव्यवस्थाओं के लिए प्रासंगिक है, जहां जनसंख्या वृद्धि की दर धीमी होती है और ध्यान मौजूदा संसाधनों की उत्पादकता और दक्षता को अधिकतम करने पर केंद्रित होता है।

उदाहरण के लिए, विस्तृत संवृद्धि में कृषि भूमि का विस्तार, नए कारखाने बनाना या समग्र उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए बुनियादी ढाँचे की परियोजनाओं में निवेश करना शामिल हो सकता है। वहीं, गहन संवृद्धि में तकनीकी नवाचारों को लागू करना, कार्यबल के कौशल में सुधार करना या मौजूदा संसाधनों से अधिक मूल्य निकालने और प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ाने के लिए संगठनात्मक दक्षता को बढ़ाना शामिल हो सकता है।

दोनों प्रकार की संवृद्धि, विस्तृत और गहन, संतुलित और सतत आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। विस्तृत संवृद्धि आर्थिक आधार को विस्तारित करने और जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने की नींव रखती है, जबकि गहन संवृद्धि यह सुनिश्चित करती है कि संसाधनों का कुशल और उत्पादक रूप से उपयोग किया जाए, ताकि जीवन स्तर और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

इसके अलावा, विस्तृत और गहन संवृद्धि के बीच अंत:क्रिया अर्थव्यवस्था के विकास के चरण और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार भिन्न होती है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में प्रारंभिक चरण में विस्तृत संवृद्धि को प्राथमिकता दी जा सकती है, ताकि बुनियादी आवश्यकताओं और बुनियादी ढाँचे की कमियों को दूर किया जा सके, जबकि अर्थव्यवस्था के परिपक्व होने पर गहन संवृद्धि उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा में सुधार के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

प्रश्न 4. किसी अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव का क्या अर्थ है?

उत्तर–अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन से तात्पर्य इसकी आर्थिक गतिविधियों की संरचना, संगठन, और कार्यप्रणाली में एक मौलिक बदलाव से है। यह परिवर्तन एक आर्थिक संरचना से दूसरी संरचना की ओर एक आंदोलन को दर्शाता है, जो अक्सर उत्पादन, रोजगार, और उत्पादक संसाधनों के क्षेत्रीय वितरण में महत्त्वपूर्ण बदलावों से जुड़ा होता है।

एक आम उदाहरण संरचनात्मक परिवर्तन का वह स्थिति है, जब कोई अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि या ग्रामीण-आधारित होती है और फिर वह मुख्य रूप से औद्योगिक या शहरी-आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो जाती है। इस परिदृश्य में, अर्थव्यवस्था कृषि से उद्योग और सेवाओं की ओर संसाधनों के पुन: आवंटन का अनुभव करती है, जो प्रौद्योगिकी, कार्यबल के कौशल और संगठनात्मक पैटर्न में बदलाव के साथ होती है। जैसे-जैसे औद्योगीकरण और शहरीकरण बढ़ता है, कृषि का सापेक्ष महत्त्व कम हो जाता है, जबकि विनिर्माण और सेवा क्षेत्र का विस्तार होता है, जिससे आर्थिक परिदृश्य का पुनर्गठन होता है।

संरचनात्मक परिवर्तन विशिष्ट क्षेत्रों के भीतर भी हो सकते हैं, जिससे उत्पादन तकनीकों, उत्पाद मिश्रण और बाजार के अभिविन्यास में बदलाव होते हैं। उदाहरण के लिए, तकनीकी प्रगति और नवाचार अधिक पूंजी-गहन उत्पादन विधियों की ओर बदलाव को प्रेरित कर सकते हैं, जिससे कार्यबल के कौशल आवश्यकताओं में परिवर्तन और नए संगठनात्मक प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, उपभोक्ता वरीयताओं में बदलाव या वैश्विक बाजार की गतिशीलता उद्योगों के भीतर उत्पादन और व्यापार पैटर्न में बदलाव का कारण बन सकती है।

संरचनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया अक्सर विभिन्न आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी कारकों से प्रेरित होती है। आर्थिक वृद्धि, वैश्वीकरण, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, तकनीकी नवाचार, और नीति हस्तक्षेप सभी अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तनों की गति और दिशा को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, तीव्र जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण आवास, बुनियादी ढाँचे और उपभोक्ता वस्तुओं की मांग को उत्तेजित कर सकते हैं, जिससे शहरी-आधारित उद्योगों और सेवाओं का विस्तार तेज हो सकता है।

साथ ही, संरचनात्मक परिवर्तन का अर्थव्यवस्था के समग्र विकास मार्ग पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। आर्थिक गतिविधियों में विविधता लाने, उत्पादकता बढ़ाने और नवाचार को बढ़ावा देकर, संरचनात्मक परिवर्तन दीर्घकालिक वृद्धि, रोजगार सृजन, गरीबी उन्मूलन और जीवन स्तर में सुधार में योगदान कर सकता है। हालांकि इस समायोजन की प्रक्रिया में कुछ चुनौतियाँ भी हो सकती हैं, जैसे–बेरोजगारी, आय असमानता, पर्यावरणीय क्षरण, और सामाजिक विघटन, विशेष रूप से उन क्षेत्रों और क्षेत्रों के लिए जो इस बदलाव से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते हैं।

प्रश्न 5. आर्थिक विकास आर्थिक संवृद्धि से किस प्रकार भिन्न है? आर्थिक विकास के साथ अर्थव्यवस्था के कौन-से दो अभिलक्षण प्राय: जुड़े रहते हैं?

उत्तर–विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास और आर्थिक परिवर्धन शब्दों के अर्थ को अलग-अलग ढंग से प्रयुक्त किया है। प्राय: अर्थशास्त्री आर्थिक विकास शब्द का प्रयोग अल्पविकसित देशों के लिए और आर्थिक वृद्धि शब्द का प्रयोग विकसित देशों के लिए करते हैं। हिक्स के अनुसार, 'विकास' शब्द का संबंध पिछड़े देशों से है, जहां पर साधनों का पूर्ण उपयोग नहीं हुआ हो और उनके विकास की संभावना हो। जबकि 'वृद्धि' शब्द का प्रयोग आर्थिक दृष्टि से विकसित देशों से है। आर्थिक वृद्धि में परिवर्तन क्रमिक होता है तथा दीर्घकाल तक स्थिर रहता है, परंतु आर्थिक विकास में परिवर्तन रुक-रुक कर होता है।

वास्तव में 'विकास' तथा 'वृद्धि' शब्दों का अर्थव्यवस्था के प्रकार से कोई संबंध नहीं है। दोनों में भेद परिवर्तन की प्रकृति तथा कारणों से है। शुम्पीटर के अनुसार, "विकास स्थिर अवस्था में एक निरंतर तथा स्वत: प्रेरित परिवर्तन है, जो पहले से वर्तमान संतुलन अवस्था को हमेशा के लिए परिवर्तित तथा विस्थापित करता है, जबकि वृद्धि दीर्घकाल में होने वाली क्रमिक परिवर्तन है जो बचत तथा जनसंख्या की दर में धीरे-धीरे वृद्धि द्वारा आती है।"

अत: आर्थिक वृद्धि का संबंध देश की प्रति व्यक्ति आय या उत्पादन में एक मात्रात्मक निरंतर वृद्धि से है, जो कि उसकी श्रम शक्ति, उपभोग, पूँजी और व्यापार की मात्रा में प्रसार के साथ होती है। दूसरी ओर, आर्थिक विकास एक विस्तृत धारणा है, यह आर्थिक

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com